वेदान्त आश्रम एवं मिशन की मासिक ई - पत्रिका

वेदान्त पीयूष

वर्ष - २५ सितम्बर - २०२५ प्रकाशन - ९

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त पीयूष

सितम्बर २०२५

प्रकाशक

वेदान्त आश्रम,

ई - २९४८, सुदामा नगर

इन्दौर - ४५२००९

Web : https://www.vmission.org.in

email : vmission@gmail.com

वेदान्त पीयूष

विषय सूचि

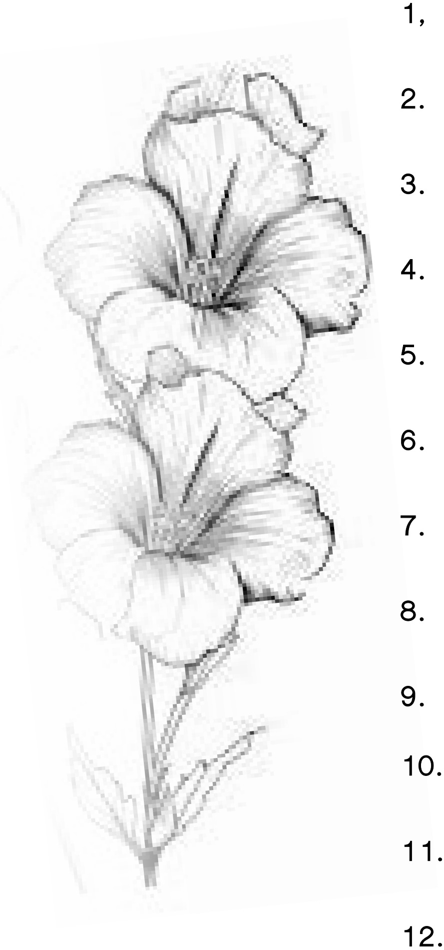

1,	प्रकाशक पृष्ठ	02
2.	श्लोक	05
3.	पू. गुरुजी का संदेश	06
4.	वाक्यवृत्ति	13
5.	गीता और मानवजीवन	19
6.	जीवन्मुक्त	24
7.	श्री कैकेयी चरित्र	27
8.	कथा-अष्टावक्र	31
9.	आश्रम-मिशन समाचार	34
10.	आगामी कार्यक्रम	56
11.	इण्टरनेट समाचार	59
12.	लिन्क	60

सितम्बर 2025

आत्मबोध

श्लोक : ५०

तीर्त्वा मोहार्णवं हत्वा
रागद्वेषादिराक्षसान्।
योगी शान्तसमायुक्तः
आत्मा रामो विराजते॥

योगी पुरुष मोहसागर को पार कर, राग-द्वेष रूपी राक्षसों को मार कर शान्ति से एकरूप होकर आत्मा में ही रमण करता है।

सन्देश

पूज्य गुरुजी
स्वामी आत्मानन्दजी

गीता में ध्यान

ध्यान सभी के लिए एक रुचिकर विषय है – चाहे आस्तिक हो या नास्तिक। अलग-अलग लोगों की प्राथमिकताओं और लक्ष्यों के आधार पर, वे सभी अपने अपने प्रयासों की प्रक्रिया में अपने मन की महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि हर कोई यह सुझाव देता है कि ध्यान हमारे दैनिक जीवन का एक अभिन्न अंग बनना चाहिए। ध्यान का वास्तविक स्वरूप और प्रक्रिया भी अलग अलग होते है। आइएं, संक्षेप में देखें कि इस संदर्भ में भगवद् गीता क्या कहती है।

अध्याय : ६, ध्यानयोग

भगवद् गीता का छठा अध्याय ध्यानयोग और आत्मसंयम योग कहलाता है। यह ध्यान देने योग्य है कि गीता का उपदेश ध्यान के अभ्यास से आरम्भ नहीं होता है और न ही पतंजलि महर्षि

का प्रसिद्ध अष्टांग योग। अष्टांग योग में, ध्यान सातवां चरण है। यहां तक कि भक्ति सम्प्रदाय में भी, श्री राम द्वारा शबरी को बताई गई प्रसिद्ध नवधा भक्ति में, जप, पहला सोपान नहीं होते हुए पांचवां चरण है। यद्यपि कई लोग इसे एक प्रारम्भिक बिन्दु के रूप में निर्धारित करते हैं। इसलिए वे महान ऋषियों के द्वारा बताए गए ध्यान की अर्थात् प्रामाणिक बात नहीं कर रहे हैं, किन्तु किसी और की, अपनी प्रणाली की बात कर रहे हैं। इस लेख में भगवद् गीता में जो कहा गया है, उसी तक अपने मन्तव्य को सीमित रखेंगे।

ध्यान के लिए मन को तैयार कराना

सर्व प्रथम जो भगवान कृष्ण बताते हैं, वह बहिरंग साधना है। यह कर्मक्षेत्र में रहते हुए ही ध्यान के लिए तैयारी करना है। एक स्वकेन्द्रित और चिन्तित मन ध्यान के लिए सही नहीं है, चाहे कोई भी विधि क्यों न हो?

सही सुझाव यह है कि विमान को उड़ान भरने से पहले उसे सही गति प्राप्त करने दें। यहीं पर हमारी दिन-प्रतिदिन की गतिविधियां काम आती है। अधिकांश समय हम कर्म के क्षेत्र में होते हैं, और

up

यदि हम अहं की संतुष्टि के लिए कार्य करते रहते है, तो हम मूल रूप से यह पुष्ट करते रहते है कि मैं सीमित और अपेक्षावान् व्यक्ति हूं। जब हमने पहले ही यह निश्चय कर लिया है कि 'मैं सीमित हूं' तो फिर ध्यान में कुछ नया नहीं खोजेंगे। किन्तु संकुचित अहं की संतुष्टि के लिए ही कार्यरत रहेंगे। अतः पहले प्रेमपूर्वक और धर्ममय तरीके से जीना सीखें। एक मार्ग है जिसे प्रेयमार्ग कहा जाता है,- जो अहं की संतुष्टि का मार्ग है। और दूसरा है - श्रेयमार्ग या धार्मिकता का मार्ग। श्रेयमार्ग विचारशीलता और चिन्तन को सुगम बनाता है। यह प्रथम सोपान है।

स्वयं के साथ रहना सीखें

यदि आप स्वयं के सत्य को जानना चाहते हैं, तो हमेशा भीड़ में न रहें। यह बहिर्मुखता है और इसका तात्पर्य है कि स्थायी आनन्द का स्रोत बाहर है, अपने भीतर नहीं है। स्वयं के साथ रहना सीखें, प्रकृति के साथ रहना सीखें, चिन्ताओं से मुक्त होकर बस अपने चारों और प्रकृति की सुन्दरता को देखें। अपनी निर्भरता को कम करें, कम से कम पराधीनता के साथ बलवान बनें। इस तरह अपने साथ बैठ पाएंगे और अपने भीतर की दुनिया का अवलोकन कर पाएंगे।

मन पर स्वामित्व स्थापित करें

मन को अपना स्वामी न बनाएं। स्वच्छन्द जीवन जीना अपने मन के गुलाम होने जैसा है। मन एक ऐसा सुन्दर उपकरण है जो अपनी समझ और दृढ़ विश्वास के निर्देशन में सब से अच्छा कार्य करता हैं। अपने मन पर स्वामित्व स्थापित करने का सब से अच्छा तरीका भगवान की कृपा का अनुभव करना है। जप- उन सभी आशीर्वाद के बारे में सोचना, जो भगवान ने आप पर बरसाएं हैं और भगवान को, जिसने आपको और इस सुन्दर दुनिया को बनाया है, हार्दिक धन्यवाद देना। यही जप का मूल सार है। यह मन को प्रबन्धित करने का प्रथम सोपान है।

मन को जानें

एक बार जब आप अपने मन को अपेक्षाकृत मेनेज कर लेते हैं, तो महत्वपूर्ण प्रश्न आता है कि, ‘यह मन क्या है? विचार क्या है?’ मन को जानने के लिए विनम्रतापूर्वक, शान्ति से बैठकर उसका अवलोकन करें। मन क्यों भटकता है, हमारे मन में आम तौर पर कौन से विचार आते है? यह सब जानना महत्वपूर्ण है। वे सभी हमारी कण्डिश्निंग को प्रकट करते हैं, और अन्ततः हमें अपनी कण्डिश्निंग को संभालना

और नकारना भी होगा। उसके लिए अपने मन को तटस्थता से अवलोकन करना सीखें।

अन्त में विचारक की ओर ध्यान मोड़े

सभी विचार एक विचारक द्वारा प्रेरित होते हैं, विचारक को देखने के लिए विचारों को नजर अंदाज न करें, बल्कि विचारों के भीतर और उसके माध्यम से विचारक को देखें। यही मात्र है जो विचारों को ला रहा है और सभी उसकी अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए ही है। इसलिए विचार मात्र विचारक के सत्य को प्रकट करते हैं। जब तक हम वह विचारक बने रहते हैं, तब तक हमारे लिए उससे परे की दुनिया में प्रवेश करना असम्भव है। विचारक का सत्य जानें, यही अहंकार 'मैं' है। यह वही है, जिसे आज तक हम 'मैं' मानते रहे है।

जीव+आत्मा कण्डिशनिंग है

जब हम तटस्थता से अपने सत्य को देखते हैं, तब हमें वे सभी धारणाएं और उपाधियां स्पष्ट दीखती है, जिन्हें हम अपने उपर पर भार की तरह ढोते रहते हैं। धारणाओं को केवल धारणा देख लेना ही

उसे नकारना है। यही उसका वास्तविक निषेध है। जब हम अपनी समस्त गहरी धारणाओं को नकार देते हैं, तब हम वही होते हैं, जो वस्तुतः हम है। गीता हमें 'हम हम होकर स्थित रहे' यह लक्ष्य दे रही है। अपने सत्य में जगने के बाद और कोई विचार आने मत दीजिएं। स्वयं होकर स्थित रहे। अपने स्वप्रकाश, शाश्वत, कालातीत अस्तित्व को देखें। यही अपना वास्तविक स्वरूप है। यह सभी से परे है, फिर भी सब में व्याप्त है। इस तथ्य को गहराई से महसूस करना है।

यही संक्षेप में ध्यान की पद्धति है, जिसे भगवद्गीता और सभी उपनिषदों में उद्घाटित किया गया है।

आदि शंकराचार्य

द्वारा

विरचित

वाक्यवृत्ति

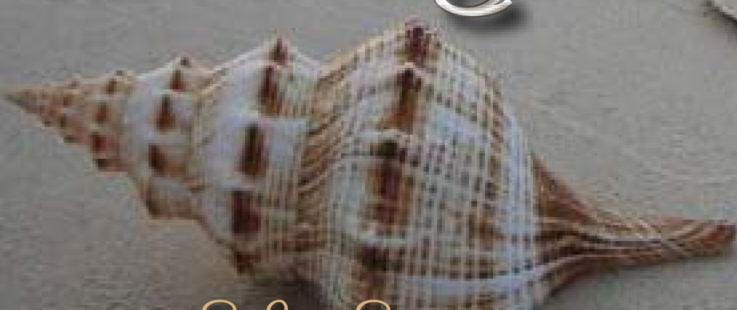

स्वामिनी अमितानन्द

यस्य प्रसादादहमेव विष्णुः मयि-एव सर्व परिकल्पितं च।
इत्थं विजानामि सदात्मरूपं तस्यान्घ्रि पद्मं प्रणतोऽस्मि नित्यम्।।

श्लोक - २८

यः साक्षिलक्षणो बोधः
त्वं पदार्थः स उच्यते।
साक्षित्वमति बोद्धृत्वं
अविकारि तयाऽऽत्मनः॥

जो साक्षीरूप चेतन तत्व है, वह ही त्वं पद का अर्थ है। आत्मा अविकारी होने से बोध-स्वरूप ही साक्षीपन की तरह बताया जाता है।

वाक्य वृत्ति

आचार्य यहां भी त्वं पद के अर्थ को ही बता रहे हैं। आचार्य ने पूर्व श्लोकों में त्वं पद के अर्थ को देह, प्राण, इन्द्रियां, मन तथा अवस्थात्रय के द्रष्टा की तरह से बताया था। यह द्रष्टा 'मैं' ही हूं, कोई ओर नहीं। जो समस्त दृश्य पदार्थों को, देहादि में हो रहे समस्त परिवर्तन, विकारादि को समान रूप से प्रकाशित करता है। उसमें न किसी प्रकार की प्रतिक्रिया करता है, न ही उसमें कोई परिवर्तन या विकार होता है। इस प्रकार जो निर्विकार, तथा किसी प्रकार के परिवर्तन की अपेक्षा के बगैर सब को प्रकाशित करता है, उसे साक्षी कहा जाता है। यह साक्षी कौन है? आचार्य यहां बता रहे हैं कि–

यः साक्षिलक्षणो बोधः त्वं पदार्थः स उच्यते।

तत्त्वमसि महावाक्य में जो त्वं पद का प्रयोग किया जाता है, उसका व्यवहार में जीवभाव से प्रयोग होता है। परन्तु वस्तुतः उसका स्वरूप त्वं पद लक्षित चेतन अथवा ज्ञानस्वरूप आत्मा ही है।

यही सब का साक्षी, आत्मा है। यहां प्रश्न यह होता है कि क्या आत्मा में स्वाभाविक रूप से साक्षीपना है अथवा साक्षीपन एक कर्तारूप से विद्यमान है? यदि साक्षी होकर प्रकाशित करना एक कर्ता की तरह से होता है, तो आत्मा अविकारी नहीं हो सकती। साथ ही कर्ता होने पर उसमें संकुचिता, भोक्तृत्व आदि दोष भी स्वाभाविक होगे। क्योंकि साक्षी बनकर प्रकाशित करने में अपने से पृथक् किसी प्रकाशित होने योग्य पदार्थ अर्थात् द्वैत की अपेक्षा रखता है।

किन्तु यह साक्षी अविकारी, पूर्णस्वरूप है। अतः उसमें चेष्टा से साक्षीपन नहीं हो सकता है। तथापि उसमें साक्षित्व की अनुभूति होती है, उसका क्या स्वरूप है? साक्षी अर्थात् बोद्धृत्व अर्थात् ज्ञानस्वरूप, ज्ञान ही जिसका स्वरूप है। ज्ञानस्वरूप होने से उसका होना स्वतःसिद्ध है।

जिस प्रकार सूर्य प्रकाशस्वरूप है; उसकी सन्निधि में जो कुछ भी आता है, वह प्रकाशित होता है। अग्नि उष्णस्वरूप है, अतः सन्निधि

प्राप्त होने पर वह वस्तु गरम हो जाती है। वैसे ही ज्ञानस्वरूप होने से उसके जो भी निकटस्थ होता है, वह चेतनवान होता है।

आत्मा चेतनस्वरूप है, उसमें किसी प्रकार का ज्ञातृत्व नहीं है। दूसरा अनात्मा, मन है। वह जड़ होने से उसमें भी ज्ञातापन नहीं है। ऐसे में ज्ञातृत्व को एक मिश्रण के रूप में स्वीकारना होगा। जब भी हम किसीको जानते है, तो वहां चेतनस्वरूप आत्मा तो होती ही है, चेतन आत्मा का कभी भी अभाव नहीं होता है। किन्तु साथ में मन अर्थात् अन्तःकरण होता है। अन्तःकरण पंचमहाभूत के माया के सात्विक अंश से बना है। अतः उसमें चेतन को प्रतिबिम्बित करने की, चेतना को उधार लेने की क्षमता है। वह यह चेतना प्रतिबिम्बित चेतना अथवा चिदाभास कहलाती है। एवं यहां प्रतिबिम्बित चेतना और मूल चेतना दोनों मिलाकर एक जाननेवाला अस्तित्व में आकर सबको प्रकाशित करता है।

जिस प्रकार प्रतिबिम्ब का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता है, दर्पण और सामने बिम्ब दोनों के होने पर एक काल्पनिक हस्ति अस्तित्व में आती है, जिसे हम प्रतिबिम्ब की संज्ञा देते है। जिस प्रकार

प्रतिबिम्ब सत्य नहीं किन्तु काल्पनिक होता है। उसी प्रकार यहां प्रतिबिम्बित चेतना जो सब की प्रकाशक बनती है, उसे अस्तित्व में आने के लिए दर्पण स्थानीय मन और दूसरा बिम्बरूपा चेतन की अपेक्षा होती है, अर्थात् प्रतिबिम्बित चेतना, चिदाभास, ज्ञाता, द्रष्टा की तरह विद्यमान है। वह ही सब को यथावत् प्रकाशित करती है। उसमें अच्छे-बुरे आदि का आरोपण मन के संस्कार व वासना की वजह से होता है वस्तुतः यही प्रतिबिम्बित चेतना ही द्रष्टा की तरह स्थित होकर सब को प्रकाशित करती है। जो कि अविकारी आत्मा में एक कल्पना है। उसकी स्वतंत्र सत्ता नहीं होने से नैमित्तिक अर्थात् झूठा है। वस्तुतः चेतनस्वरूप आत्मा अविकारी होने से उसमें साक्षित्व या ज्ञातापना है ही नहीं।

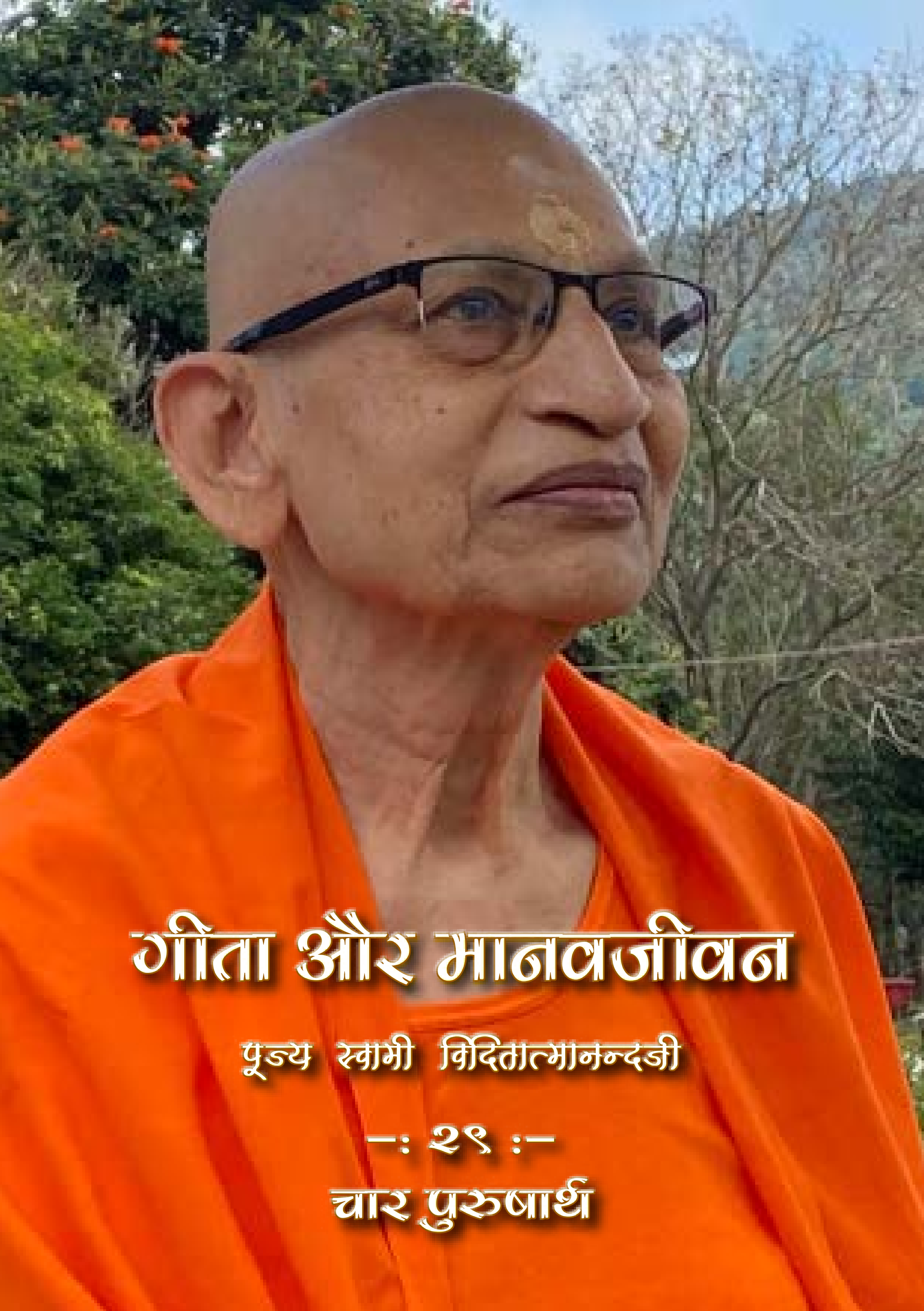

गीता और मानवजीवन

पूज्य स्वामी विदितात्मानन्दजी

-: २९ :-

चार पुरुषार्थ

गीता और मानवजीवन

अपने शास्त्रों में चार पुरुषार्थ बताए गए है, वह है - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इसमें से अर्थ और काम - दो पुरुषार्थों से हम सब परिचित है। अर्थ अर्थात् धन-सम्पत्ति, सुख-सुविधा, मान-प्रतिष्ठा। मनुष्य को इन सब की प्राप्ति की इच्छा है, और उसके लिए वह प्रयत्न करता है। शारीरिक और बौद्धिक धरातल पर भी सुरक्षा, सम्मान आदि प्राप्त करने की स्वाभाविक इच्छा को पूरी करने के प्रयत्न को अर्थ कहते है। अर्थ - यह प्रथम पुरुषार्थ है, क्योंकि हमारी पहली मांग या चाह सुरक्षा व सुविधा की है। पहले शरीर की मांग पूर्ति होती है, उसके बाद इन्द्रियों की मांग पूरी की जा सकती है। इन्द्रियों के उपभोगों का नाम है - काम। काम या सुख की हमें स्वाभाविक इच्छा है। उसे पूरी करने के लिए 'अर्थ' अर्थात् धन

-सम्पत्ति साधनरूप बनते है। इस प्रकार अर्थ - काम साधारणतः साथ-साथ चलते है।

अर्थ और काम हमारी प्रथम आवश्यकता होने पर भी हमारे शास्त्रों ने धर्म को प्रथम स्थान दिया है। मनुष्य को अर्थ और काम की इच्छा है, उसे सुरक्षा, सुख, मान इत्यादि की चाह है। शास्त्र उसे स्वीकारते हैं। किन्तु इन सब की प्राप्ति धर्ममार्ग से होनी चाहिए। धर्म का त्याग नहीं किया जा सकता, इसे विशेष महत्व दिया जाता है। धर्म अर्थात् जो समग्र जीवन को, समग्र जगत को धारण करता है। जगत में ऐसा कोई धर्म, कोई नियम है, जो जगत को धारण कर रहा है। विविध तत्त्वों को जोड़नेवाला, सब में संवादिता रखनेवाला कोई सूत्र है, जिसे नियति, मूलभूत नियम, मूलभूत धर्म कहा जाता है। उसीके अनुरूप समग्र जगत कार्य कर रहा है। मनुष्य भी जगत का एक अंश होने के कारण उनके कर्म उस संवादिता के अनुरूप हो तो ही मनुष्य जीवन सुखी हो सकता है। सृष्टि के नियम से विपरीत जाकर हम दुःख को ही आमंत्रित करते हैं, अपने लिए तथा अन्य के लिए भी। उदाहरण के तौर पर, भारत में वाहन को बांई ओर चलाने का

नियम है, इस नियम का पालन नहीं करते है और दांई और चलाएं तो अपने लिए तथा अन्य के लिए भी मुसीबत को आमंत्रित करते है।

सृष्टि के नियम का सामान्य ज्ञान सब को होता ही है। भगवान ने सब को इस प्रकार का सामान्य ज्ञान देकर भेजा है। प्रत्येक मनुष्य को अन्य के साथ कैसे आचरण करना उसका पूरेपूरा ज्ञान है। इस विषय में मन में पूरी स्पष्टता है। किसी अन्य व्यक्ति को हमारे साथ कैसा आचरण करना चाहिए, उसका मुझे ज्ञान है; यही दीखाता है कि अन्य को हमारे साथ कैसा आचरण करना चाहिए। क्योंकि हम अन्य से जैसे आचरण की अपेक्षा रखते है, वैसा अन्य व्यक्ति भी हमसे आचरण की अपेक्षा करता है। इसलिए ऐसा कोई नहीं कह सकता कि जगत में जो सामान्य धर्म या नियम है, उसका हमें ज्ञान नहीं है। इस धर्म को सामान्य धर्म कहा जाता है। सत्य बोलना, धर्माचरण करना, सुरापान नहीं करना, मांस-भक्षण नहीं करना, किसी प्राणी की हिंसा नहीं करना - यह सब विधि-निषेध अपने शास्त्रों में, इस सामान्य धर्म को ध्यान में रखकर ही दिए गए है।

शास्त्र अपने से कोई अधिक अपेक्षा नहीं रखता है। जो आचरण करने में हम समर्थ है, जो हमारे सामर्थ्य, मर्यादा के अन्दर होता है, उसे ही

करना हमें शास्त्र बताते है। ऐसा नहीं है कि हमारे उपर किसी प्रकार की जोर-जबरदस्ती की जा रही है। ऐसा भी नहीं है कि इन सब विधि-निषेध के द्वारा अपने उपर किसी प्रकार का बोज डाल दिया जाता है। सामान्यतः हमें कोई निर्देश दिया जाएं तो स्वाभाविक ही मन में एक प्रकार का प्रतिकार होता है कि 'हमें यह बतानेवाले है कौन?' शास्त्र के समक्ष भी प्रतिकार होता है कि 'हमें नियंत्रित करनेवाले वो है कौन?' परन्तु कदाचित् हमें ख्याल न हो कि शास्त्र हमें मात्र स्मरण ही कराता है कि किस परिस्थिति में किस प्रकार का व्यवहार करनेयोग्य है। इसीका नाम है धर्म। इस प्रकार से कर्म करना मनुष्यमात्र का कर्तव्य है।

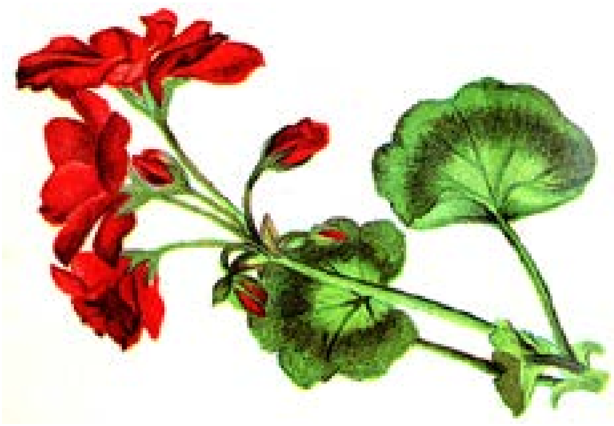

जीवन्मुक्त

– ६३ –

बदरीनाथ

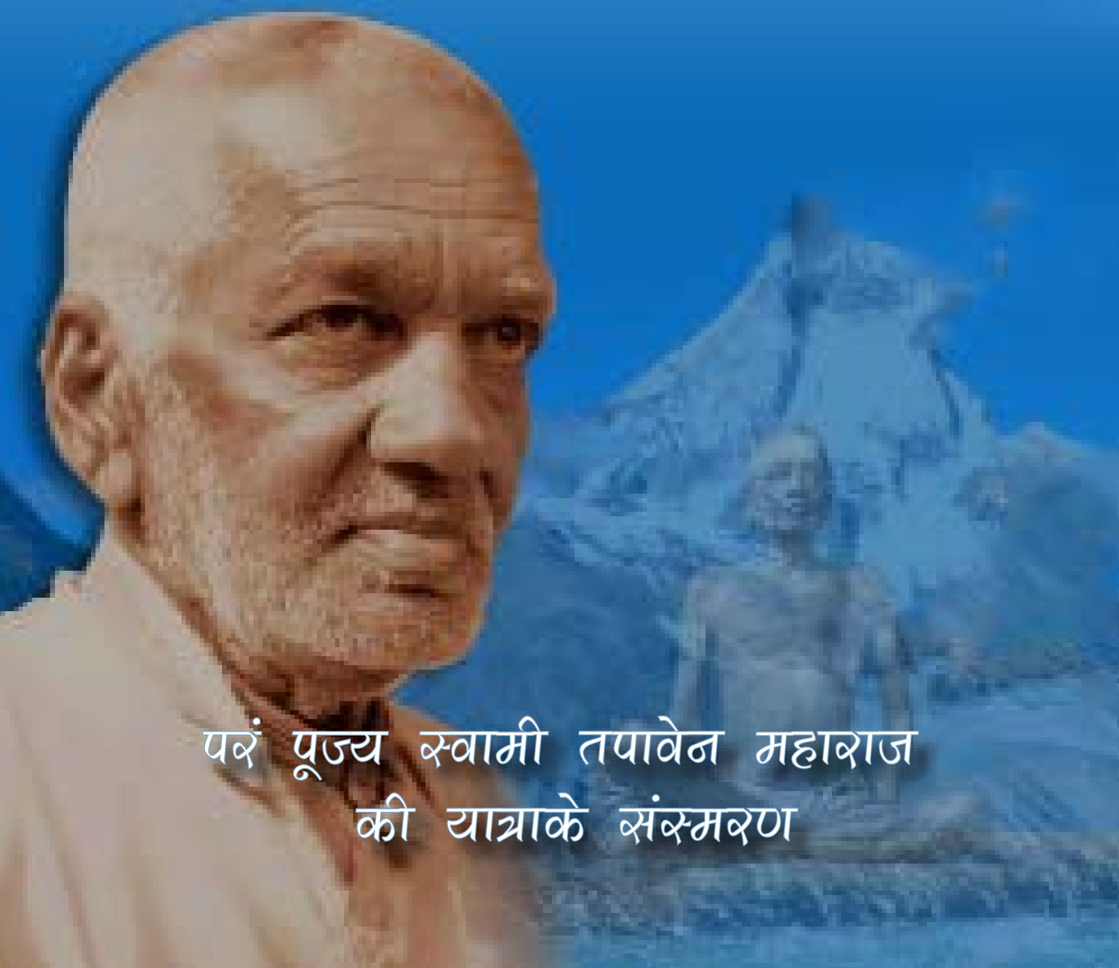

परं पूज्य स्वामी तपोवन महाराज
की यात्राके संस्मरण

जीवन्मुक्त

अहा! युधिष्ठिर का वैराग्यलोक विलक्षण है। ज्यों ज्यों यह विचार आता है कि राजसिंहासन का सुखानुभव करनेवाले कोमल गात्र पाण्डुपुत्र एकाकी होकर, इतने दुर्गम तथा भयानक स्थानों से होकर कैसे चढ़े होगे, त्यों त्यों आश्चर्य बढता जाता है। अहो! वैराग्य की महिमा अपार है। वैराग्य के उदय के साथ ही सुकुमारता और कठिनता में, दुर्बलता और प्रबलता में भीरुता और शूरता में तथा दुःख और सुख में कोई अंतर नही रहता। वैराग्य दुष्कर महाकार्यों को भी सुकर बना देता है। लौकिक विषय में तृष्णा के अभाव को वैराग्य कहते हे।

इस प्रकार अशेष विषयों में वितृष्णा को पा जाने वाला व्यक्ति संसार में विरला ही दीखता है। तृष्णा का जन्म भी अनेक कारणों से होता है। तृष्णा की उत्पत्ति यदि एक निमित्त न हो

तो दूसरा निमित्त करता है। अर्थात् एक पदार्थ की तृष्णा शांत हो तो दूसरे पदार्थ की तृष्णा उदित हो जाती है। यदि स्त्रीतृष्णा शांत हो तो धनतृष्णा प्रज्वलित रहती है। धनतृष्णा अपशांत दीखती है तो शारीरिक सुखों को भोग करनेकी तृष्णा जाग उठती है। देहासक्ति शांत होती है तो यश और प्रतिष्ठा की तृष्णा एक सिंहनी के समान हृदय गह्वर में गरजने लगती है। संसार में ऐसे अनेक व्यक्ति है, जो कामकिंकरता से मुक्त होनेपर भी धन के पीछे दिन रात दौड़ते फिरते है, अथवा कामिनी कंचन की आशा छोड़ देने पर भी शारीरिक मोह में पड़े रहते है। ऐसे लोग भी संसार से दुर्लभ नही है, जो जीवन की इच्छा को छोडकर आदर प्राप्ति को ही परम पुरुषार्थ मानकर उसकी प्राप्ति के लिए भगीरथ प्रयत्न करते है। यश की आकांक्षा बडे बडे विवेकी विद्वानों को भी मोहित कर देती है। नाम महिमा के प्रकृतिसिद्ध लोभी को रोक लेना सामान्य पुरुष के लिए संभव नहीं है। सब कुछ जीता जा सकता है, पर आत्म महिमा फैलाने की इच्छा को संस्कारजन्य रूप से स्वतः प्रेरित यशोभिलाषा को जीतना कठिन है। यश की अभिलाषा एक विवेकशील धीर पुरुष के लिए महान् शत्रु है।

(श्री रामचरित मानस पर आधारित)

श्री कैकेयी चरित्र

– ०१ –

प्रनवउं परिजन सहित विदेहू।
जाहि राम पद गूढ़ सनेहू।।

श्री कैकेयी चरित्र

‘विधि प्रपंच गुन अवगुन साना’ का सबसे बड़ा दृष्टान्त महारानी कैकेयी का चरित्र है। सौन्दर्य, शील और तेजस्विता से पूर्ण कैकेयी ने जीवन के पूर्वार्ध में महाराज दशरथ से लेकर सारी प्रजा को अपने गुणों का प्रशंसक बना लिया था। सारे अयोध्या राज्य में उनके यश की पताका फहरा रही थी। किन्तु सारे समाज में नारी की अविश्वसनीयता का दृष्टान्त बन बैठीं। पर वस्तुतः यह नियति का एक क्रूर उपहासमात्र ही नहीं था। उनके चरित्र का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करने पर इन गुण और दोषें के मूल उपादान उनमें प्रारम्भ से ही दृष्टिगोचर होते हैं।

ब्रह्मा ने उन्हें अप्रतिम सौन्दर्य प्रदान किया था और वे एक ऐसे पिता की पुत्री बनीं जो सर्वप्रथम हानि–लाभ का गणित करने के पश्चात् ही किसी कार्य में प्रविष्ट होते हैं। इसी

मनोवृत्ति का परिचय उन्होंने अपनी ही सौन्दर्यमयी पुत्री के विवाह में भी दिया। उनके द्वारा किया जाने वाला कन्यादान केवल समर्पण की भावना से ही प्रेरति नहीं था। वय-प्राप्त महाराज श्रीदशरथ को कन्या देते समय वे उनसे यह वचन लेना नहीं भूलते हैं कि उनकी कन्या ही सूर्यवंश में अगला सम्राट देगी। महाराज श्री दशरथ की दृष्टि में इस प्रकार का वचन देने में कोई उलझन न थी। कैकेयी की सौन्दर्य राशि से उनका रसिक मन तो प्रभावित था ही, वे यह मान बैठे थे कि अब ज्येष्ठ महारानी से पुत्र प्राप्त होने की सम्भावना ही नहीं है। महाराज दशरथ ने चाहे जितनी सरलता से वचन दे दिया हो किन्तु केकय नरेश इतने मात्र से सन्तुष्ट होकर बैठ जाने वाले नहीं थे। इसलिए जब विविध दहेजों के बीच मन्थरा भी दासी के रूप में अर्पित की गई तब उसका उद्देश्य केवल परम्परा का पालन मात्र न था। अपनी सुन्दरता के लिए प्रख्यात केकय देश के द्वारा एक कुरुपा दासी को सेविका बनाकर भेजा जाय, यह बड़ा अटपटा सा प्रतीत होता है। किन्तु मन्थरा में सौन्दर्य का चाहे जितना अभाव रहा हो पर ब्रह्मा ने बुद्धि देते समय उसके साथ कोई कृपणता नहीं की थी। शरीर की वक्रता के साथ साथ कूटनीतिक कौशल का टेढ़ापन उसके अन्तर्मन में विद्यमान

था। इसलिए एक ओर जहां वह कैकेयी के लिए मनोरंजन का साधन थी, वहीं दूसरी ओर केकय नरेश उसकी चतुर बुद्धि के प्रति आश्वस्त थे। विचित्र प्रकार की कुंठाओं से ग्रस्त मन्थरा कैकेयी को अत्यन्त प्रिय थी। यह प्रियता उन्हें कितनी महंगी पड़ेगी इसका रंचमात्र ज्ञान उन्हें नहीं था। स्वभाव से उदार और राजसी गुणों से युक्त कैकेयी अयोध्या में आते ही सब के हृदय का हार बन बैठीं। केवल अन्तःपुर में ही वे पट्टमहिषी के रूप में निवास नहीं करती थीं अपितु युद्ध-क्षेत्र में भी वे महाराज श्री की शौर्यमयी सहचरी थीं। युद्ध-क्षेत्र में किसी अवसर विशेष पर उन्होंने जिस शौर्य और धैर्य का प्रदर्शन किया उससे प्रसन्न होकर राजा ने उन्हें दो वरदान मांगने का अवसर दिया।

कथा / प्रसंग

अष्टावक्र

अष्टावक्र

महाभारत में अष्टावक्र की कथा वनपर्व में बताई गई है। वह कहोल और सुजाता का पुत्र था, जो क्रमशः ऋषि उद्दालक के शिष्य और पुत्री थे। जब सुजाता गर्भवती हुई, तो वह उन वैदिक प्रवचनों में भाग लेने लगी, जिनमें उनके पति और पिता शामिल होते थे।

जैसे जैसे उनका गर्भ बड़ा होता गया, गर्भस्थ शिशु बोली जाने वाली बातों को अधिक से अधिक समझने लगा, और करीब सातवें महिने के आसपास, कहोल द्वारा बोले गए श्लोकों में की गई अशुद्धियों को सुधारना शुरु कर दिया। यह आठ अलग-अलग अवसरों पर हुआ, जिसके परिणामस्वरूप कहोल ने अपने ही पुत्र को शरीर में आठ विकृतियों का शाप दे दिया।

इस प्रकार, अष्टावक्र का जन्म हुआ, जिनके हाथ, पैर, घुटने, छाती, और सिर में विकृतियां थी। उनके जन्म के समय के आसपास, कहोल राजा जनक के महल में गए और वहां के ऋषि वन्दी से एक शास्त्रार्थ में हार गए।

जब वह बारह वर्ष के हुए, तो अष्टावक्र को सुजाता और उद्दलक से अपने पिता की वास्तविकता के बारे में पता चला और उन्होंने जनक के दरबार में वन्दी को हराने का निश्चय किया। एक लम्बे और कठिन शास्त्रार्थ के बाद, वन्दी पराजित हो गए और उन्हें स्वयं पानी में फेंक दिया गया।

लेकिन वन्दी ने प्रकट किया कि वह जल के देवता वरुण के अवतार हैं और उन्होंने पिछले शास्त्रार्थो में हार के कारण जलसमाधि दिए अन्य सभी ऋषियों को मुक्त कर दिया। फिर, कहोल के सुझाव पर, अष्टावक्र ने समंगा नदी में स्नान किया, जिससे उनके सभी विकृत अंग और अवयव सीधे हो गए।

up

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Dhyan Session

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Online Vedanta Classes

Subject: Tattva-Bodha

Subject: Gita Chapter-7

आश्रम / मिशन समाचार

Online Podcast

Poojya Swamini Poornanandaji

आश्रम / मिशन समाचार

Sri Krishna Janmashtami Celebrations

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Maha-Aarti at 12 o clock

आश्रम / मिशन समाचार

'Jhoola Somwar' during Shravan

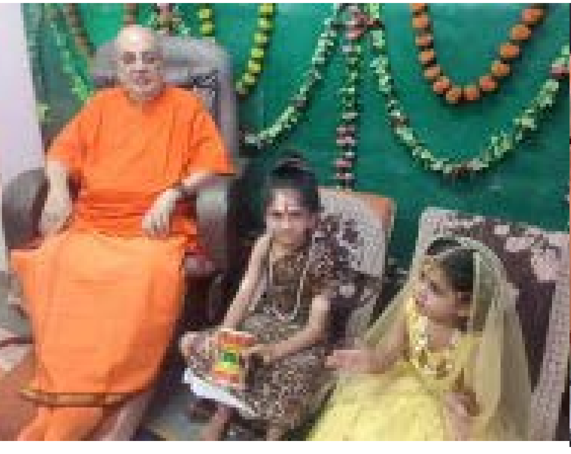

आश्रम / मिशन समाचार

Om Namah Shivaya

आश्रम / मिशन समाचार

Gau-Sewa at Gaushala

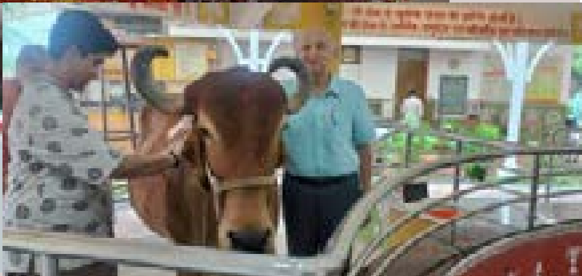

आश्रम / मिशन समाचार

Celebration at Gaushala

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

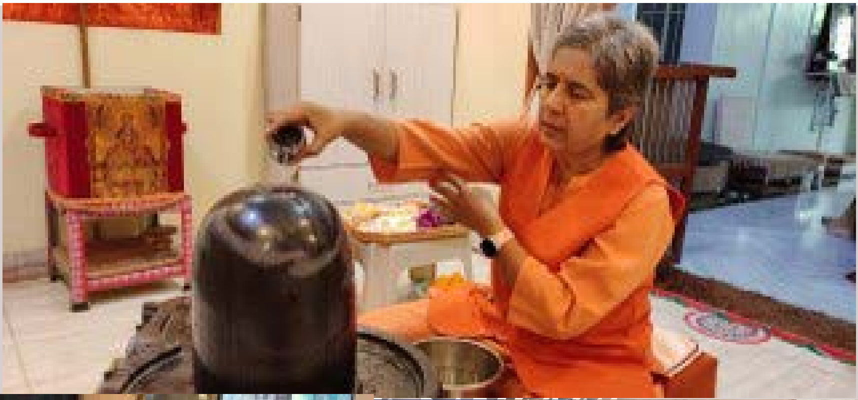

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Yogabhyasa for Campers

by Maitri Patel

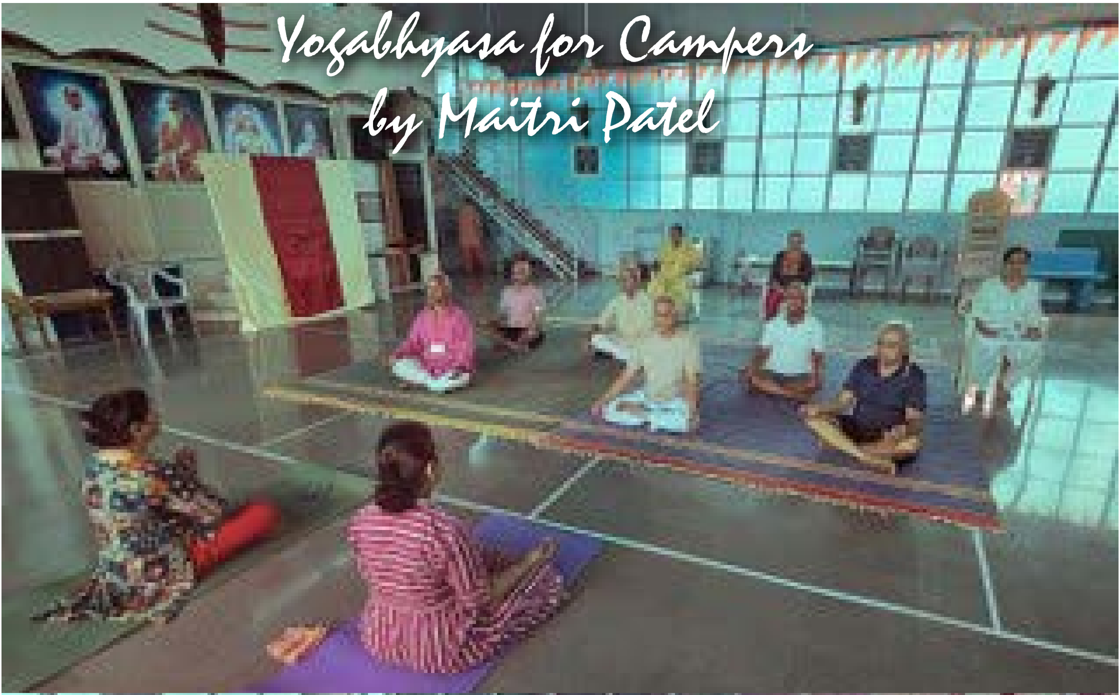

आश्रम / मिशन समाचार

Yagnopavit of few Devotees

ऑनलाईन ज्ञान यज्ञ

08/09/2025 से 03/10/2025

(श्राद्धपक्ष के आरम्भ से दसहरा तक)

वक्ता : पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी

प्रतिदिन सायं 7.00 बजे

You Tube पर प्रसारण

विषय : केनोपनिषद्

अपने स्वजनों की स्मृति में अथवा अन्य निमित्त से इस ज्ञानयज्ञ के आयोजन में अपनी आहुति प्रदान करे और पुण्यलाभ अर्जित करे।

सम्पर्क : 7000361938

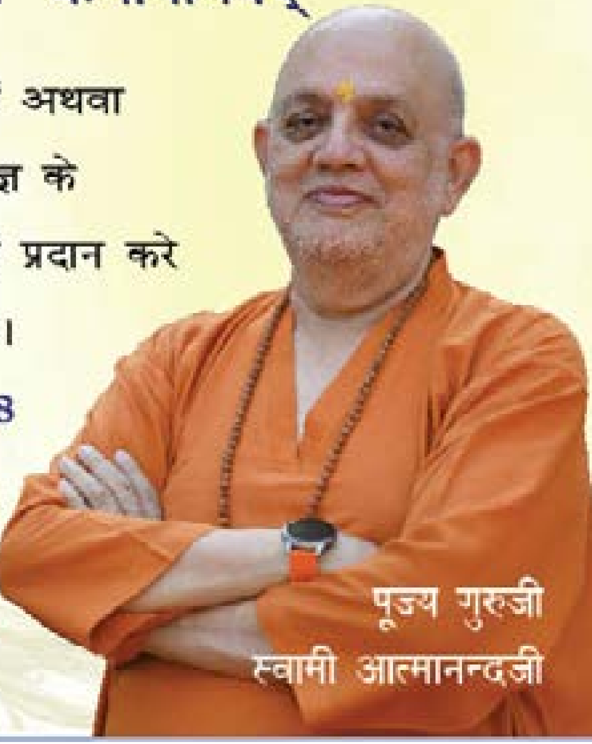

Vedanta Ashram

www.vmission.org.in

vashram.in@gmail.com

आश्रम / मिशन समाचार

श्रीमद् भगवद् गीता

(शांकर भाष्य समेत) नित्य कक्षाएं

प्रतिदिन प्रातः 7.30 बजे से (मंगल से शनिवार)

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी

ओनलाईन सत्संग

प्रति शनिवार, सायं 4 बजे से

on Google Meet

आदि शंकराचार्य विरचित तत्त्वबोध

पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी

ओनलाईन सत्संग

प्रति रविवार, सायं 4 बजे से

on Google Meet

श्लोकपाठ / ध्यान / सत्संग

पूज्य स्वामिनी समतानन्दजी

आश्रम / मिशन समाचार

ओनलाईन ज्ञानयज्ञ

8 सितम्बर से 3 अक्टूबर तक

प्रथम श्राद्ध से विजयादशमी तक

सायं 7.00 बजे प्रसारण

on YouTube Channel

सामवेदीय केनोपनिषद्

पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी द्वारा

एकादशी सत्संग

प्रति एकादशी को

on YouTube Channel

पूज्य स्वामिनी पूर्णानन्दजी द्वारा

Internet News

Talks on (by P. Guruji) :

Video Pravachans on YouTube Channel

Video Pravachans on Internet Archive Channel

(☝ Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS

SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA

SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING

MORAL STORIES ETC

Audio Pravachans (☞ Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS/

SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA

SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

Monthly eZines

Vedanta Sandesh - Sep '25

Vedanta Piyush - Aug '25

Visit us online :
Vedanta Mission

Check out earlier issues of :
Vedanta Piyush

Join us on Facebook :
Vedanta & Dharma Shastra Group

Subscribe to our WhatsApp Channel
Vedanta Ashram Channel

Published by:
Vedanta Ashram, Indore